IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 9, March 2024

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा परिक्षेत्र में कार्यरत शारीरिक शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

अरूण कुमार सिंह

अतिथि क्रीड़ाधिकारी

शासकीय महाविद्यालय, गोविन्दगढ़, रीवा (म प्र)

सारांश :–

व्यक्ति के जीवन में संतुष्टि सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। यदि व्यक्ति अपने काम या पेशे से संतुष्ट है तो वह अपने शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने में सक्षम हो सकता है और परिणाम स्वरूप व्यक्ति जीवन में अधिक से अधिक ऊंचाईयॉ हासिल कर सकता है। उसी तरह हर पेशे में संतुष्टि जरूरी है। अध्ययन का उद्देश्य अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा परिक्षेत्र में आने वाले सभी महाविद्यालयों के क्रीड़ाधिकारियों की शिक्षण के प्रति नौकरी की संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता का पता लगाना है। यह अध्ययन विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत 100 क्रीड़ाधिकारियों पर आयोजित किया गया। शोधकर्ता ने क्रीड़ाधिकारियों के लिए डॉ0 विकास कुंडु (जेएसएस–केवी) द्वारा विकसित नौकरी संतुष्टि स्केल और डॉ0 सुषमा तलेसरा, डॉ0 अख्तर बानों (टीएलएसटी–टीएसबीए) द्वारा विकसित नेतृत्व क्षमता स्केल के माध्यम से डेटा एकत्र किया। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा परिक्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत 100 शारीरिक शिक्षा शिक्षकों से डेटा एकत्र किया गया। डेटा का परीक्षण (**Z**) और प्रतिशत विधि लागू करके किया जाता है। रॉ स्कोर को (**Z**) स्कोर में बदल दिया गया। महाविद्यालय में स्थाई रूप से कार्यरत क्रीड़ाधिकारियों का अपनी नौकरी से संतुष्टि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया। जबकि नेतृत्व क्षमता में अतिथि के रूप में कार्यरत शारीरिक शिक्षा शिक्षक आगे थे। इसीलिए स्थाई रूप से नौकरी करने वाले शारीरिक शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट थे।

की वर्ड : नौकरी से संतुष्टि, नेतृत्व क्षमता, शारीरिक शिक्षा, दृष्टिकोण, शिक्षण, अध्यापक

परिचय :–

शारीरिक शिक्षा शब्द दो अलग–अलग शब्दों 'शारीरिक' और 'शिक्षा' से बना है। भौतिक शब्द का सरल अर्थ शरीर से संबंधित है। यह किसी एक या सभी शारीरिक विशेषताओं से संबंधित है। यह शारीरिक शक्ति, शारीरिक सहनशक्ति, शारीरिक फिटनेश, शारीरिक उपस्थिति या शारीरिक स्वास्थ्य हो सकता है। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ है प्रशिक्षण की व्यवस्थित प्रेरणा, या किसी विशेष कार्य को करने के लिए जीवन की तैयारी। इन दोनों शब्दों का संयुक्त अर्थ वह व्यवस्थित निर्देश या प्रशिक्षण होगा जो शारीरिक गतिविधियों या गतिविधियों के कार्यक्रम से संबंधित है। मानव शरीर के विकास और रखरखाव, शारीरिक शक्तियों के विकास या शारीरिक कौशल को बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

शिक्षा एक 'करने' वाली घटना है जिसे कोई भी करने के माध्यम से सीखता है। शिक्षा केवल कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नहीं है। यह खेल के मैदान पर, पुस्तकालय में या घर पर भी हो सकता है। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के जीवन को समृद्ध बनाने में सहायक होती है। शारीरिक शिक्षा का एक सुनिर्देशित कार्यक्रम स्वस्थ जीवन, सामाजिक प्रभावकारिता, अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 9, March 2024

और खाली समय के सार्थक उपयोग की ओर ले जाता है। आधुनिक संदर्भ में, ''शारीरिक शिक्षा'' शब्द का हमारे दैनिक जीवन में बहुत व्यापक और महत्वपूर्ण अनुप्रयोग हो गया है।

शारीरिक शिक्षा मनुष्य की शारीरिक गतिविधि के ''अंदर'' और ''द्वारा'' वाली शिक्षा है। शारीरिक शिक्षा वह शिक्षा है जो शारीरिक विकास से शुरू होती है और मनुष्य के संपूर्ण विकास की ओर बढ़ती है, जिसका अंतिम परिणाम सशक्त और मजबूत शरीर, अच्छे स्वास्थ्य, मानसिक सर्तकता और सामाजिक और भावनात्मक संतुलन प्राप्त करना है। ऐसा व्यक्ति नई स्थितियों की व्याख्या अधिक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण तरीके से प्रभावी ढंग से करने में सक्षम होगा और उसे ''शारीरिक रूप से शिक्षित व्यक्ति'' कहा जा सकता है।

व्यक्ति के जीवन में संतुष्टि सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है। यदि व्यक्ति अपने काम या पेशे से संतुष्ट है तो वह अपने शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने में सक्षम हो सकता है और परिणामस्वरूप व्यक्ति जीवन में अधिक से अधिक ऊंचाईयॉ हासिल कर सकता है। उसी तरह हर प्रोफेशन में संतुष्टि जरूरी है। यह शारीरिक शिक्षा या समान्य शिक्षा है। लेकिन जब हम इन व्यवसायों से निपटते हैं तो कुछ मतभेद पैदा हो जाते हैं। कुछ मामलों में समान वेतन और समान दर्जा मिलने के बावजूद भी अधिकांश शिक्षक अपने पेशे से असंतुष्ट प्रतीत होते हैं। अपने काम के प्रति उनकी असंतुष्टि के कई कारण हो सकते है। शारीरिक शिक्षा शिक्षक के मामले में अच्छा होने के बावजूद विषय पर ज्ञान या अधिकार वह सहज महसूस नहीं कर पाता, इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण सुविधाओं की कमी प्रतीत होती है जैसे कि कुछ महाविद्यालयों में छात्र खेलना तो चाहते हैं लेकिन उनके पास खेलने के लिए मैदान नहीं हैं, पर्याप्त उपकरण नहीं है।

आज, शारीरिक शिक्षा में शिक्षण एक मांग वाला पेशा बन गया है जिसके लिए असाधारण कौशल की आवश्यकता होती है। शारीरिक शिक्षा सिखाने वालों को बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है और उनके काम में कई कर्तव्य शामिल होते हैं, जैसे योजना बनाना, शिक्षण, मूल्यांकन, प्रशासनिक और विभिन्न अवर्गीकृत कार्य। एक शारीरिक शिक्षा शिक्षक को किसी भी अन्य शिक्षण क्षेत्र की तुलना में अधिक विधिक प्रकार की प्रतिभाओं की आवश्यकता होती है। उनकी जिम्मेदारियां विविध हैं और समाज उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में देखता है जो एक तरफ गतिहीन लोगों की सामान्य फिटनेस बना और बनाए रख सकता है और दूसरी तरफ जमींनी स्तर पर खिलाड़ियों को तैयार करने में मदद कर सकता है। परिणामस्वरूप, महाविद्यालयों में काम करने वाले क्रीड़ाधिकारी अपने कार्यभार को भारी और कठिन भी महसूस करते है। उनमें से कुछ को लगता है कि समाज की अपेक्षाओं के अनुपात में उन्हें उचित स्थान, मान्यता, स्वायत्तता, वेतन, काम करने की स्थिति, विकास और उन्नति के अवसर आदि नहीं दिए जाते हैं। यह सब दुनिया भर के कई विकासशील देशों में सामान्य रूप से शिक्षकों और विशेष रूप से शारीरिक शिक्षकों के बीच नौकरी में असंतोष या कम नौकरी संतुष्टि का कारण बनता है।

छात्रों के व्यापक विकास और शारीरिक शिक्षा शिक्षक की कार्य संतुष्टि की राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भुमिका है। शारीरिक शिक्षा शिक्षक बनने के इच्छुक युवा यदि रूचि, दृष्टिकोण, धारणा, अध्ययन और व्यावसायिक कौशल रखते हैं तो वे इस क्षेत्र में अच्छा करियर बना सकते हैं। चार्ल्स बूचर के अनुसर, एक आदर्श शारीरिक शिक्षा शिक्षक में नैतिक चरित, नेतृत्व, ईमानदारी, सरलता, आकर्षण, व्यक्तित्व, शारीरिक कुरूपता की अनुपस्थिति, सर्वोत्तम गतिशीलता जैसे कई सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक और भावनात्मक मूल्यों और गुणों की एक श्रृंखला होनी चाहिए। शक्ति, गतिशील कौशल, उच्च बुद्धि, विषयपरक, सर्वोत्तम सामाजिक तर्कसंगत क्षमता, सीखने में रूचि, सहयोगात्मक रवैया, मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति क्षमता, गतिविधियों का समन्वय आदि। उपरोक्त गुणों वाले शारीरिक शिक्षा शिक्षक को नौकरी से संतुष्टि मिलनी चाहिए।

कोठारी आयोग ने उचित ही शिक्षकों को राष्ट्रीय निर्माता कहा है। छात्रों का सर्वांगीण विकास शिक्षकों से प्रभावित होता है। इसके अलावा, शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का शिक्षकों के प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। शिक्षकों का प्रदर्शन कई

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 9, March 2024

करकों से प्रभावित होता है, जिनमें से नौकरी से संतुष्टि एक महत्वपूर्ण आयाम है। इसलिए शोधार्थी ने अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा परिक्षेत्र में कार्यरत शारीरिक शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन किया। वर्तमान लेख शारीरिक शिक्षा शिक्षकों के बीच उनके लिंग, आयु, वैवाहिक स्थिति, शिक्षण अनुभव और संस्थान के प्रबंधन के संबंध में नौकरी की संतुष्टि की जांच करता है (2014 रामबाबू)।

लंबे समय से नौकरी से संतुष्टि हमेशा शोधकर्ताओं और विद्वानों के बीच चर्चा का एक मुद्दा रही है। शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों में नौकरी की संतुष्टि पर कई जांच भारतीय शोधकर्ताओं द्वारा की गयी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि **शर्मा, रंजना** ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ के बी.एड. महाविद्यालयों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में विभागीय प्रशिक्षणार्थियों को भी शामिल किया गया तथा कार्य के फलस्वरूप इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि– बी.एड. में सीधी भर्ती प्रशिक्षणार्थियों में विभागीय प्रशिक्षिणार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक जनतांत्रिक अभिवृत्ति पायी गई है। प्राप्त प्रदत्तों में से 75 प्रतिशत बी.एड. प्रशिक्षिणार्थियों में जनतांत्रिक अभिवृत्ति पायी गई है। बी.एड. प्रशिक्षण के अन्तर्गत महिला प्रशिक्षिणार्थियों में पुरूष प्रशिक्षिणार्थियों की अपेक्षा अधिक जनतांत्रिक अभिवृत्ति पायी जाती है, अतः इस प्रकार लिंग का प्रभाव पड़ता है। **मिरे, श्रीमती चन्द्रवती** ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत पुरूष/महिला क्रीड़ाधिकारियों एवं सहायक प्राध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया तथा तुलना करने पश्चात् निष्कर्ष प्राप्त किया कि– शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला क्रीड़ाधिकारियों की व्यवसायिक संतुष्टि पर लिंग का प्रभाव नहीं पड़ता है। शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष क्रीड़ाधिकारियों एवं पुरूष सहायक प्राध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला क्रीड़ाधिकारियों की व्यवसायिक संतुष्टि पर लिंग का प्रभाव नहीं पड़ता है। शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष क्रीड़ाधिकारियों एवं पुरूष सहायक प्राध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत क्रीड़ाधिकारियों एवं सहायक प्राध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत क्रीड़ाधिकारियों एवं सहायक प्राध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **बर्न्स 1978** ने अपने शोध से यह प्राप्त किया कि कार्यवाही नेता के पास इतने अधिकार होते है कि वह अपने दल के प्रदर्शन या अप्रदर्शन के लिए कुछ विशेष कार्य कर सकता है और इनाम या सजा दे सकता है। प्रबंधक को अवसर देता है कि वह अपने समूह का नेतृत्व करे और उसका समूह उसके नेतृत्व का पालन करने को सहमत होता है ताकि एक निर्धारित लक्ष्य पूरा हो सके और उसके बदले में उनको कुछ मिले। नेता को अधिकार इसलिए दिया जाता है कि वह मूल्यांकन कर सके। **क्लेन, जेइग्रेट, नाइट और जीओं 2006** ने अपने शोध से यह प्राप्त किया कि नेता संगठन की प्रभावशीलता को बढ़वा कर प्रदर्शन में 5 व्यापक कार्य करता है। इन कार्यो में शामिल है– (1) पर्यावरण निगरानी, (2) आधीनस्थ गतिविधियों का आयोजन, (3) आधीनस्थों का शिक्षण और प्रशिक्षण, (4) दूसरों को प्रेरित करना और (5) समूह कार्यो में सक्रिय रूप से भाग लेना।

पद्धतिशास्त्र :–

विषयों का चयन :–

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य में अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा परिक्षेत्र में कार्यरत कुल 100 शारीरिक शिक्षकों को यादृच्छिक रूप से चुना गया।

यंत्र :–

इस अध्ययन में, विश्वसनीय और वैध डेटा एकत्र करने के लिए डॉ0 विकास कुंडु (जेएसएस–केवी) द्वारा विकसित नौकरी संतुष्टि स्केल और डॉ0 सुषमा तलेसरा, डॉ0 अख्तर बानों (टीएलएसटी–टीएसबीए) द्वारा विकसित नेतृत्व क्षमता स्केल का उपयोग किया गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 9, March 2024

सांख्यिकीय विश्लेषण :–

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा परिक्षेत्र में कार्यरत शारीरिक शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता का पता लगाने के लिए साधन, मानक विचलन और 'जेड' परीक्षण विधि की गणना की गयी।

परिणाम और चर्चा :–

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा परिक्षेत्र में कार्यरत शारीरिक शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता के विश्लेषण के लिए, कच्चे अंकों (रॉ स्कोर) को जेड स्कोर में परिवर्तित किया गया। इसके बाद माध्य और मानक विचलन की गणना की गई, इससे संबंधित डेटा को तालिका क्रमांक 1 में प्रस्तुत किया गया है और चित्र 1 में दर्शाया गया है।

TABLE NO – 1: MEAN AND STANDARD DEVIATION OF JOB SATISFACTION & LEADERSHIP ABILITY AMONG COLLEGEOUS PHYSICAL EDUCATION TEACHER/SPORTS OFFICER

Variable	Category	N	Mean	S.D.
Job Satisfaction & Leadership Ability	Collegeous Physical Education Teacher/Sports Officer	100	118.25	15.87

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि महाविद्यालयों के शारीरिक शिक्षा शिक्षकों एवं क्रीड़ाधिकारियों की कार्य संतुष्टि का माध्य और मानक विचलन क्रमशः 118.25 और 15.87 है। तालिका क्रमांक 2 से पता चलता है कि महाविद्यालयों के शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का प्रतिशत क्या है, 03 प्रतिशत शिक्षक अत्यधिक उच्च कार्य संतुष्टि वाले हैं, 09 प्रतिशत शिक्षक अत्यधिक उच्च कार्य संतुष्टि वाले हैं, 18 प्रतिशत शिक्षक उच्च कार्य संतुष्टि वाले हैं, 45 प्रतिशत शिक्षक औसत कार्य संतुष्टि वाले हैं, 17 प्रतिशत शिक्षक निम्न कार्य संतुष्टि वाले हैं, 06 प्रतिशत शिक्षक अत्यंत निम्न कार्य संतुष्टि वाले हैं, 02 प्रतिशत शिक्षक अत्यधिक निम्न कार्य संतुष्टि वाले हैं।

तो अंततः हम कह सकते हैं कि कार्य संतुष्टि का प्रतिशत औसत श्रेणी का (45%) था, उसके बाद उच्च श्रेणी का (18%), निम्न श्रेणी का (17%), अत्यंत उच्च श्रेणी का (09%), बहुत निम्न श्रेणी का (06%), अत्यधिक उच्च श्रेणी का (03%) और अत्यधिक निम्न श्रेणी का (02%) रहा। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के परिक्षेत्र में कार्यरत शारीरिक शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता में अपनी नौकरी से औसत रूप से संतुष्ट है।

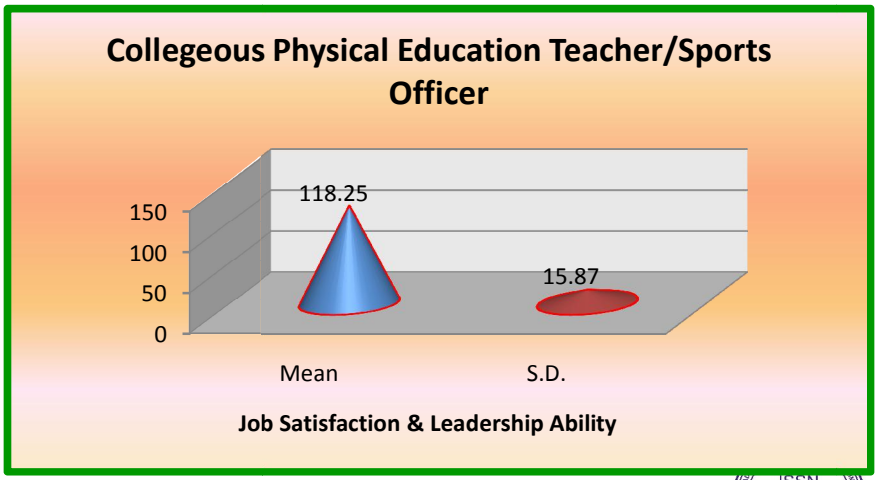

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 9, March 2024

TABLE NO – 2: PERCENTAGE OF PHYSICAL EDUCATION TEACHER/SPORTS OFFICER JOB SATISFACTION

A	Teacher Are Extremely High Job Satisfaction	03%
B	Teacher Are Very High Job Satisfaction	09%
C	Teacher Are High Job Satisfaction	18%
D	Teacher Are Average Job Satisfaction	45%
E	Teacher Are Low Job Satisfaction	17%
F	Teacher Are Very Low Job Satisfaction	06%
G	Teacher Are Extremely Low Job Satisfaction	02%

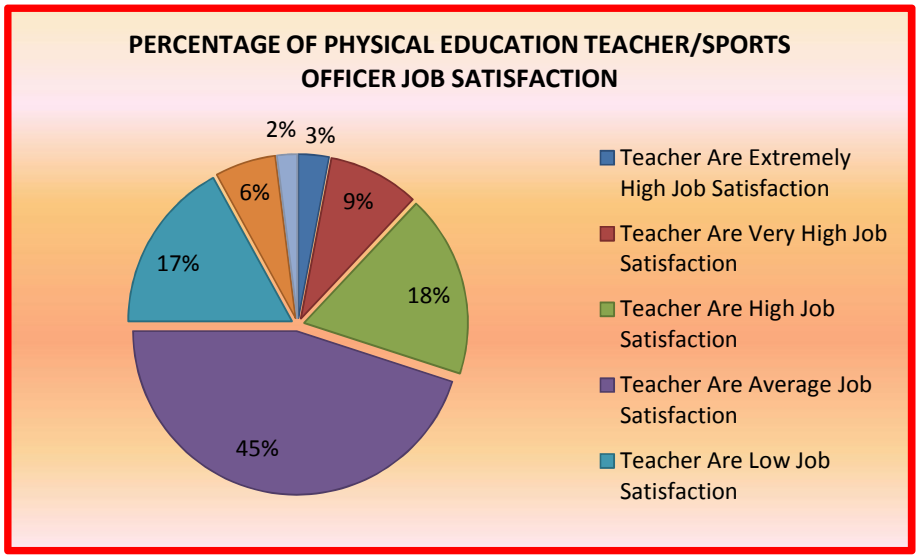

निष्कर्ष :–

- अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्याल रीवा के परिक्षेत्र में कार्यरत कुल शारीरिक शिक्षकों/क्रीड़ाधिकारियों में से लगभग 50 प्रतिशत शिक्षक अपनी नौकरी और नेतृत्व क्षमता से औसत रूप से संतुष्ट हैं।
- अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्याल रीवा के परिक्षेत्र में कार्यरत कुल शारीरिक शिक्षकों/क्रीड़ाधिकारियों में से लगभग 50 प्रतिशत से भी कम को बहुत उच्च से उत्यंत निम्न श्रेणी के बीच नौकरी और नेतृत्व क्षमता से संतुष्टि है।

खेलों में भागीदारी :–

इस अध्ययन के परिणाम मध्यप्रदेश के महाविद्यालयों तक ही नहीं वरन् स्कूलों के प्रधानाध्यापकों/प्रधानाचार्यो, प्रशासकों और शिक्षा विभाग को प्रशासनिक प्रक्रिया को संशोधित करने और शारीरिक शिक्षा और खेल से संबंधित प्रोग्रामरों में आवश्यक बदलाव करने के लिए एक उपयोगी पृष्ठभूमि प्रदान करेगी। इस अध्ययन के परिणाम शारीरिक शिक्षा शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान करने तथा उनकी सामाजिक स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। शारीरिक शिक्षा शिक्षकों के प्रति कार्य संतुष्टि जानने में भी मदद मिलेगी। अध्ययन के परिणाम से शारीरिक शिक्षा शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि के लिए जिम्मेदार कारकों को समझने में मदद मिलेगी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 9, March 2024

अनुसंधान के लिए भावी सुझाव :–

देश के अन्य हिस्सों की एक बड़ी आबादी पर अध्ययन किया जा सकता है। इसी तरह के अध्ययन शिक्षा के हर क्षेत्र के लिए हो सकते हैं। इसी तरह का अध्ययन प्रशिक्षकों के लिए भी किया जा सकता है। यह भी सिफारिश किया जा सकता है कि ऐसा ही अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों पर भी किया जा सकता है। अध्ययन के निष्कर्षो से यह भी सिफारिश की जाती है कि अन्य विषय के शिक्षकों पर भी इसी प्रकार का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ :–

- गुप्ता एस.पी., एस्टडी. ऑफ. जॉब–सैटिसफेक्शन एट थ्री लेवल ऑफ टीचिंग पी.एच.डी. थिसिस, एजुकेशन, मेरठ यूनिवर्सिटी, 1980।
- बर्न्स जे.एस., लीडरशिप, न्यूयार्कः हार्पर एंड रॉ पब्लिसर्स 1978।
- ब्लैक. आर. माउण्टन जे., 'द मैनेजेरीयल ग्रीडः द के टू लीडरशिप एक्सीलेन्स हॉस्टनः गुल्फ पब्लिसिंग 1964।
- मिरे श्रीमती चंद्रावती, ''गुरूघासी दास विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में कार्यरत क्रीड़ाधिकारी एवं सहायक प्राध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन'' 2004।
- दत्ता कविता, ''बिलासपुर जिले के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं कक्षा अध्यापन में जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'' 1998।